RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

वर्ष - 19 अंक - 6, भाग - 2
(अप्रैल- 2023)
Vol - XIX Issue No - VI Part-II
(April- 2023)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 7.125

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

मासिक

अक्षर वार्ता

मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

वर्ष-19 अंक - 6, भाग - 2, अप्रैल - 2023
Vol - XIX, Issue No. VI, Part - II
April - 2023
Impact Factor - 7.125
aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
संपादक- डॉ. मोहन बैरागी
संपादक मंडल :-
डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोंसले (पुणे)
प्रो. उमापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा
सहायक सम्पादक :-
डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विशेषज्ञ समिति
डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, उज्जैन

सह संपादक
डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (**Kruti Dev 010**) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (**Times New Roman**) ,एरियल फोंट (**Arial**) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. **Please Follow- APA/MLA Style for formatting** अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक:- **Union Bank of India,**

Account Holder - Aksharwarta
Current Accont NO. 510101003522430
IFSC- UBIN0907626 Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि युपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का उपयोग करें
तथा भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत, मोबा :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

नोट:- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही हैं।

Peer Review Board/Committee

1. Dr. Lakkidi Komar Reddy, Govt. Junior College, Hasanparthy
2. Dr. Ambika Singh, Assistant Professor,Kanpur Institute For Teacher Education, Kanpur
3. Dr. Anirban Sahu, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand (India).
4. Dr. Ashutosh Kumar, Assistant Professor of Hindi, Himachal Pradesh University, Shimla
5. Dr. Gitanjali Nayak, Assistant Professor, villa Marie Degree college for women, Hyderabad
7. Dr. Kewal Krishan Malhotra, Associate professor, Guru Nanak Dev University, Amritsar
8. Dr Neelakshi Joshi, Assistant professor, Laxman Singh Mahar Govt. PG College, Pithoragarh
9. Dr Neelam Devi, Puruhottam Inter College, Khurja, Fatehpur
10. Dr. P. K. Upadhyay, Head, RBS College Bichpuri Campus DrBRA University Agra
11. Dr. Rajnikant Kumar, Assistant Professor, Amrapali Group of Institutes, Haldwani, Nainital
12. Dr. Ravi Kant Kumar, Department of Sociology, SSJ Govt P G College Syalde, Almora
13. Dr. Reshmi Raveendran, Pdf, Hindi, Cochin University of Science and Technology, Cochin
14. Dr Sadhna Agrawal, Assistant Professor, Kamala Nehru college , University of Delhi
15. Dr.Sukhvir Singh, Assistant professor, Jaswant Singh Bhadoriya Law College, Mathura
16. Dr. Suraj Mukhi, Associate Professor, Balwant Vidyapeeth Rural Institute, Bichpuri, Agra;
17. Dr. Himanshu Yadav, Assistant professor, S.P.M College, University of Allahabad
18. Mr. Jagtap Navanath Raghunath, Shri Sant Damaji Mahavidyalaya, Mangalwedha
19. Radha Bhardwaj, Assistant professor, Government Degree College, Hathras, U.P.
20. Md. Tanwir Yunus, Professor & Head, Vinoba Bhave University,Hazaribagh,Jharkhand
21. Raghvendra V Miskin, S.K. College of Arts & Comm& Sci., Talikoti, Vijaypur, Karnataka
22. Varsha Rani, Assistant Professor, Dr. B. R. Ambedkar University, Agra , UP
23. Mrs. Alka Chaturvedi, Karamat Husain Muslim Girls PG College, Lucknow, UP
24. Mrs. Anjanee Saraf, Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University, Bilaspur , CG
25. Dr. Amol Krushnarao Gulhane, Assistant Professor, RTM Nagpur University, Nagpur
26. Dr. Ashish Gangadhar Ujawane, Mahalaxmi Jagdamba College of Lib. & info. Sci., Nagpur
27. Dr. Manda Manikrao Nandurkar, Matoshree Vimalabai Deshmukh Mahavidyalaya, Amravati
28. Dr. Manisha, Professor, Rajkiya Snatkottar Mahavidhyalaya, Fatehabad, Agra
29. Nirmala Kumawata, Govt. College, Jamua, Ramgadh, Jaipur
30. Dr. Anju Sihare, Assistant Professor, Govt.Chhatrasal College pichhore, Dist. Shivpuri, M.P.
31. Dr. Atul Gupta, Assistant Professor, Govt. College, Sahrai Dist. Ashoknagar, M.P.
32. Dr. Parikshit Layek, Vice-Principal, Sri R. S. A. Teacher's Training College, Hazaribagh

अनुक्रम

» भारतीय दार्शनिक दृष्टिकोण (हिंदी सिनेमा के परिप्रेक्ष्य में)
सुश्री चंद्रकला देवाराम शाहू 07

» प्रगतिशील विचारक और सुधारक थे कबीर
डॉ. मारकण्डेय राय 11

» शुक्रनीति-वर्णव्यवस्था के सन्दर्भ में
डॉ. लज्जा पन्त (भट्ट) 16

» विभिन्न धर्मों में स्त्रियों की प्रस्थिति एवं सशक्तिकरण
डॉ. पूनम बजाज 19

» उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य व शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन
प्रीति कपूर 21

» भ्रष्टाचार : राष्ट्र विकास में बाधक
मंजु मीणा, डॉ. रेखा माली 23

» 'मुर्दहिया' और 'मणिकर्णिका' : जाति के मरघट में एक दलित छात्र का संघर्ष
डॉ. कनक लता रिद्धि 25

» लीलाधर जगूड़ी के काव्य में प्रकृति
संगीता मिर्धा 28

» सैन्य मनोविज्ञान : एक परिचय
डॉ. सीता मिश्रा 30

» अपभ्रंश में चरिउ-काव्य की परम्परा
डॉ. श्रीमती कल्पना वार्ष्णेय 32

» तकनिकी क्षेत्र में हिन्दी भाषा
सुमेध आनन्द 34

» अखिलेश के कथा साहित्य में आदिवासी विमर्श
अवनीश सिंह, डॉ. नन्दी जोशी 39

» विश्वासी एक्का की काव्यानुभूति का विश्लेषण
डॉ. दीपक सिंह 41

» प्राचीन स्थापत्य व समकालीन भित्तिचित्रण-धार्मिक नगरों के सौंदर्यीकरण के सन्दर्भ में
डॉ. लक्ष्मण प्रसाद 44

» स्वाधीनता के आंदोलन में हिन्दी कविता की भूमिका
डॉ. विमुखभाई उत्तमभाई पटेल 50

» मुक्तिबोध की कहानियों में चित्रित भूमंडलीकरण का भयावह खतरा
अरविंद तिवारी 52

» अम्बेडकर के सिद्धान्त व व्यवहार का राजनीतिनामा
डॉ. वेद प्रकाश, डॉ. कविता, डॉ. रोहताश जमदग्नि 55

» उदारीकरण के पश्चात रोजगार और उत्पादन वृद्धि में लघु एवं कुटीर उद्योग की भूमिका
डॉ. हरिश चन्द्र तिवारी 61

» प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि पर एक अध्ययन
सुदीप कुमार, डॉ. राजकुमार यादव 64

» शिशुपाल वधम् में प्राकृतिक चित्रण
डॉ. आशीष कुमार सिंह 67

» गांधी की धरती पर नफरत का माहौल : कहानीकार स्वयं प्रकाश
जानकी प्रसाद 69

» संजीव का कथा साहित्य : आदिवासी लोक संस्कृति
प्रा. डॉ. गजानन पोलेनवार 71

» "कोल जनजाति में स्वशासन व्यवस्था" : शहडोल संभाग के विशेष संदर्भ में
अरूण कुमार गोंडाने, डॉ. महेन्द्र गिरी 75

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 7.125
Vol - XIX, Issue - VI, Part- II, April - 2023
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

विश्वासी एक्का की काव्यानुभूति का विश्लेषण

डॉ. दीपक सिंह

सहायक प्राध्यापक, हिन्दी, राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, सरगुजा, छग.

सारांश:-प्रस्तुत शोध-पत्र में विश्वासी एक्का की काव्यानुभूति को समझने का प्रयास किया गया है। विश्वासी आदिवासी समाज से आती हैं अतः उनकी काव्यानुभूति आदिवासी जीवन दर्शन से अनुप्राणित है। जल, जंगल, जमीन के साथ गहरा तादात्म्य उनकी कविताओं में दिखाई पड़ता है साथ ही संघर्ष और वेदना की एक गहरी लकीर भी हमेशा मौजूद रहती है। आज आदिवासी समाज पूजीपतियों और राजसत्ता के सर्वाधिक निशाने पर है जिसकी अनुगूंज विश्वासी की कविताओं में हर जगह सुनाई पड़ती है। एक अनवरत संघर्ष में घिरे समाज की कवि होते हुए भी विश्वासी की कविताओं में जीवन का उल्लास, साझापन हर पल मौजूद है। आदिवासी दर्शन जीवन को प्राकृतिक साहचर्य के साथ उसकी पूर्णता में जीने का पक्षधर है। विश्वासी की कवितायँ इसी जीवन दर्शन से संचालित हैं।

बीज शब्द:- प्रकृति, पहाड़, जंगल, आदिवासी, विमर्श, संस्कृति, स्वतंत्रता, प्रेम और संघर्ष, स्त्री जीवन, उल्लास।

व्यक्ति जिस समाज से आता है उसकी चेतना के निर्माण में उसका अहम योगदान होता है। विश्वासी एक्का की कविताओं से गुजरते हुए धरती, पहाड़, जंगल, नदी की चिंता प्राथमिक रूप में दिखाई पड़ती है। दरअसल कवयित्री का पूरा व्यक्तित्व ही प्रकृति में लय दीख पड़ता है या कहें कि यही पूरे आदिवासी समाज की सच्चाई है। प्रकृति यहाँ अन्य नहीं है वह परिवार का हिस्सा है, वृक्ष उसका पूर्वज है, देवता है। कथाकार रणेंद्र के शब्दों में कहें तो- 'आदिवासी संस्कृति में प्रकृति से खास किस्म का जुडाव है। वह जीवन में इस तरह घुली मिली है कि वह उनका गोत्र भी है,पूर्वज भी है और देवता भी है। समस्त पर्व त्योहारों में प्रकृति परिवारी सदस्य के रूप में शामिल है।'[1] इस प्रकृति के प्रति कोई भी क्रूरता उसे वेदना सिक्त कराह से भर देती है। आजाद भारत में खासकर उदारीकरण के बाद विकास की जो पटकथा लिखी गई उसमें हर चमकती चीज अपने अन्दर कैसे एक वेदनासिक्त कराह को समोये हुए है इसकी कहानी कहती है कविता सतपुड़ा-एक। इस वेदना की धार इतनी अतल में बहती है कि प्रथम दृष्टया इसे कविता में पहचानना ही मुश्किल है-

'पर कहीं कुछ तो था इन वादियों में
पहाड़ों के समानांतर
लहरदार कोई वेदनासिक्त
उभर आई थी एक कराह
जैसे कोई आवाज दे रहा हो।
सरोदा के पीछे से
जब पानी की गहराई में
डूब रहा था सूरज
एक नाविक
विरह गीत गा रहा था।'[2]

हिन्दी साहित्य में यह समय तरह-तरह के विमर्शों से संचालित है जो कि साहित्यिक लोकतंत्रीकरण के लिए आवश्यक भी है। दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, किन्नर विमर्श कुछ समय तक पिछड़ा विमर्श की भी बात की गई लेकिन वह ऐतिहासिक स्थितियों के चलते अपना स्थान नहीं बना पाया। इस कड़ी में जब हम आदिवासी विमर्श को देखते हैं तो उसका स्वरूप एकदम भिन्न दिखाई पड़ता है। अन्य विमर्श जहाँ 'नकार' के नुक्ते से शुरू होते हैं वहीं आदिवासी विमर्श में इस 'नकार' की जगह दिखाई नहीं पड़ती। आदिवासी विमर्श का मूल स्रोत जल, जंगल, जमीन को बचने का संघर्ष है। ऐसा नहीं है कि यहाँ तथाकथित सभ्य समाज की आलोचना उनकी जीवन दृष्टि पर प्रश्न-चिन्ह नहीं है। खूब है लेकिन उसके दायरे में उस तथाकथित सभ्य समाज को बचाने की चिंता शामिल है। दरअसल आदिवासी साहित्य मनुष्य-केन्द्रीयता की सीमा लाँघ कर सम्पूर्ण जीव-जगत तथा प्रकृति के अस्तित्व रक्षा की चिंता से संचालित है। इस मायने में यह अन्य दुसरे विमर्शों से विशिष्ट और अलग है। 'यदपि हिन्दी में प्रेमचंद से लेकर रणेंद्र तक के साहित्य में आदिवासी समाज को स्थान मिलता रहा है, किन्तु आदिवासियत को आदिवासी समाज की जीवन -दृष्टि और उनके सार्थक हस्तक्षेप के बिना समझे जाने का दावा सही नहीं होगा। हालाँकि स्वयं आदिवासी चिन्तक और रचनाकार केवल आदिवासी रचनात्मकता को ही आदिवासी साहित्य कहे जाने का हठ नहीं पालते। कुछ रचनाकार उनकी आवाज को पहले सुने जाने की बात अवश्य करते हैं, किन्तु अन्य के प्रति 'नकार' भाव यहाँ प्रमुख नहीं हैं। दरअसल 'नकार भाव' ही इनकी जीवन-दृष्टि का हिस्सा नहीं है।'[3] लेकिन तथाकथित सभ्य समाज के लिए आदिवासी 'अन्य' हैं उनकी रीति-निति, परम्परा, जीवन-दर्शन से अनजान यह वर्ग इन्हें लेकर एक खास तरह की सोच से संचालित होता रहा है। अतः प्राकृतिक सह-अस्तित्व का जो जीवन दर्शन उसे सहजता से मिल सकता था उसके लिए भी वह यूरोप का मुखापेक्षी हुआ बैठा है। आदिवासियों को लेकर एक जड़ दृष्टिकोण के विकास में अकादमिक जगत का बड़ा हाथ रहा 'वेरियर एल्विन, गुहा, शरतचंद्र राय, विद्यार्थी आदि मानवशास्त्रियों ने अपने फील्डवर्क और अकादमिक कार्यों से जनजातीय समाज और,मानवशास्त्र को पर्यायवाची बना दिया। मानवशास्त्र/नृशास्त्र की पुस्तकों में 1928-32 के जनजातीय युवा-युवतियों के मात्र अधोवस्त्र धारण किये हुए चित्र हमारे अवचेतन में स्थायी रूप से बसा दिए गए। वेरियर एल्विन के 'घोटुल/धुमकुडिया' जैसी परम्परा के विश्लेषण ने शिक्षण के सामाजिक संस्थानों को मात्र यौन केन्द्रित विवरण और उसके अवचेतन को 'ब्लू' रंग में रंग डाला। ...इन सब तत्वों ने मिल-जिल कर कथित मुख्यधारा के पूर्वाग्रह निर्माण में बड़ी भूमिका निभाई है। नतीजतन जनजातीय समाज पर 'अन्यत्व'

(Otherness) का अधिरोपण इतना जबरदस्त हुआ कि उन्हें संविधान की प्रस्तावन के 'हम भारत के लोग' के 'हम' में शामिल होने के लिए आज भी जद्दोजहद करनी पड रही है।'आज मुख्यधारा यथार्थ से परे जाकर आदिवासियों को विकास विरोधी, काम से जी चुराने वाला समझती है जबकि आदिवासियों का संघर्ष अपने अस्तित्व के साथ सम्पूर्ण पृथ्वी को बचाने का है। आज सभ्यता जिस प्राकृतिक विनाश के कगार पर जा पहुंची है वहां एयर प्यूरीफायर और एसी आदि जैसे उत्पादों से स्वयं को सुरक्षित समझना सिर्फ एक बाजारू छलावा है। प्रकृति की ओर लौटे बिना विनाश से बचा नहीं जा सकता। आदिवासी जीवन दर्शन न सिर्फ प्राकृतिक सह-अस्तित्व पर आधारित है बल्कि यह अकूत धन संचय की पूजीवादी प्रवृत्ति के बरक्स केवल जरूरत आधारित संग्रह पर चलती है अर्थात यह स्वाभाविक रूप से लूट की संस्कृति के खिलाफ है और इसीलिए कॉर्पोरेट लाबी और राजसत्ता उसके खिलाफ खड़ी है। हमें अपनी धरती को बचाने के लिए कहीं और जाने की जरूरत नहीं है वह आदिवासी जीवन दर्शन में सहज उपलब्ध है। इसीलिए आदिवाशी विमर्श शब्द इस पूरे आन्दोलन के लिए बहुत छोटा है, विमर्श तो स्वयं पूजीवादी रणनीति का हिस्सा हैं जिसका व्यापक इस्तेमाल वर्ग-संघर्ष को कमजोर करने के लिए होता रहा है। आदिवासी दर्शन में स्वतंत्रता बहुत बड़ा मूल्य है, आदिवासी समाज इसे कतई छोड़ना नहीं चाहता, तमाम प्रयासों के बाद बाद भी शासकवर्गीय विचार उसके अन्दर पूरी तरह पैवस्त नहीं किये जा सके हैं और यह राज सत्ता के लिए खतरनाक है। विश्वासी लिखती हैं -

'जब लड़ाई लड़ी थी उन्होंने
स्वतंत्रता की, भूखे पेट
एक इंच भी कदम
नहीं हेट थे पीछे
भूख से मर जाना
स्वीकार था उन्हें
पर स्वाभिमान खोकर
जीना नहीं मंजूर
शहीद हो गए
हजारो बेनाम वे लोग
आजादी की चेतना भरी थी
भूख पर।'[5]

विश्वासी एक्का की कविताओं में प्रेम और संघर्ष दोनों ही परम स्वतंत्र और प्राकृतिक रूप में मिलते है कदाचित यह भी आदिवासी जीवन धारा से सहज ही उपजते हों हालाँकि मेरे लिए इस पर कोई निर्णय दे पाना मुश्किल है। बहुत लोगों को नर्मदा और सोन की लोककथा पता होगी या शायद न भी पता हो, तो कथा कुछ यूँ है कि नर्मदा का विवाह सोन से होना तय हुआ था। नर्मदा अपने प्रेमी के बारे में जानने के लिए बहुत उत्सुक थी। उसने कौतुहलवश अपनी सखी को सोन के पास भेजा कि वह उसे देख कर आये लेकिन जब उसकी सखी सोन के पास पहुँचती है तो सोन भूलवश उसे नर्मदा समझ बैठता है तथा वह भी सोन के प्रेम में पड़कर सत्य को छिपा लेती है। दूसरी तरफ सखी के लौटने में विलम्ब होता देख नर्मदा उसकी खोज में निकलती है लेकिन निर्धारित स्थल पर पहुँच कर जब वह सोन को अपनी सखी से प्रेमालाप में मग्न पाती है तो मानिनी हो तुरंत वापस मुड जाती है। वस्तुस्थिति का ज्ञान होने पर सोन नर्मदा को मनाने की बहुत कोशिश करता है लेकिन वह वापस नहीं लौटती। और तब से नर्मदा उलटी ही बहती है। वैसे तो यह एक भौगोलिक सच्चाई है लेकिन आदिवासी समाज के लिए नदी और जंगल कोई जड़ वस्तु नहीं हैं इसलिए वह इसे दोनों के प्रेम के रूप में देखता है और ऐसा प्रेम जिसमें स्वाभिमान सर्वोपरि है ,लेकिन यह स्वाभिमान सतपुड़ा के जंगलो को रंचमात्र भी लेश नहीं पहुंचाता बल्कि प्रेम का वह उदात्त रूप धारण करता है कि दोनों के बीच बसे जंगल हरी चूनर ओढ़ लेते हैं-

'नर्मदा उल्लास से भर उठी थी
और पूर्व की ओर
सोन छोड़ चुका था एक पतली धार
एक किनारे पर सूख रहा था
या कौन जाने
अन्त:प्रवाही हो चला था।
कगारों पर भर चुकी थी
अगाध गाद।
मेरे लिए इतना भर जान लेना काफी था
उन दोनों का प्रेम
सतपुडा की वादियों में
हरा रंग भर चुका था।'[6]

लेकिन यह कितना त्रासद है कि नदी,पहाड़,जंगल जिसके आजा-बाबा हों उन्हें ही उसका सबसे बड़ा दुश्मन घोषित कर दिया जाय और तो और अपने परिवेश से बेदखल करने की बर्बर कोशिशों को तथाकथित सभ्य समाज के सामने औचित्यपूर्ण भी सिद्ध किया जाय। कवयित्री अपने पूर्वज कवि भवानी प्रसाद मिश्र को याद करते हुए बहुत ही मार्मिकता से कहती है-

'अजगरों से भरे जंगल
कष्टों से सने जंगल
इन वनों के खूब भीतर
चार मुर्गे ड्डचार तीतर
पालकर निश्चिंत बैठे
गोड़ तगड़े और काले।
सोच सकते हो कि
अब तुम्हें जंगल का दुश्मन बताया जा रहा है।'[7]

इन कविता पंक्तियों से कोई यह न समझे कि यह केवल अपनी दीन दशा का अश्रुविगलित वर्णन भर है यह समझना हिन्दुस्तान के आदिवासी संघर्ष से घोर अपरिचय ही कहलायेगा क्योंकि 1857 के स्वंत्रता संग्राम के लगभग सौ साल पहले ही आदिवासियों ने अंग्रेजों के खिलाफ आजादी का बिगुल फूंक दिया था। वह धार और वह ज्वाला आज भी वैसे ही प्रज्वलित और संघर्षमयी है-

'अगर तुमने जंगल छीना
दहक उठेगा बसंत
बौरा जायेंगी अमराइयां
जलकर काली हो जायेगी कोयल'[8]

कवयित्री पूंजीवादी षड्यंत्र के तामाम दांव-पेंचों से बखूबी परिचित है और उसके पास निराला की तरह ही शक्ति की एक मौलिक कल्पना का मॉडल है जैसा कि एक अफ्रीकी साहित्यकार चिनुआ अचेबे ने अपने एक इंटरव्यू में कहा था -"until the lions have their own historians the history of hunt will always glorify the hunter " (जब तक शेरों के अपने इतिहासकार न होंगे तब तक शिकार के इतिहास में शिकारियों का गुणगान होगा)

'कुछ इसी से मिलती जुलती बात कवियित्री भी कहती है कि-

'शेर समूह में शिकार करते है

नीलगायों , तुम्हें भी समूह में रहना होगा
अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए'[9]

कहने का तात्पर्य यह है कि वास्तविक संघर्ष की विरासत और चेतना अनचाहे ही आपको वैश्विक बना देती है। आज के फासीवादी पूंजीवाद के दौर में इस चेतना को समझना और इसके साथ खड़े रहना ही एक बेहतर दुनिया का विकल्प हो सकता है। विश्वासी एक्का की बहुतेरी कविताओं में स्त्री जीवन के दुःख मुखरित होते हैं,स्त्री बहुतेरे दुःख सहती है लेकिन वह परम्परागत स्त्री विमर्श के दायरे के बाहर की स्त्री है जो सियानी (बुद्धिमान) है,स्वाभिमानी है तथा हर बर्बरता और दमन के सामने तनकर खडी है। 'बिरसो' नामक कविता के एक बहुत ही घरेलू उदाहरण से इसे समझा जा सकता है, जिसमें नातिन अपनी दादी से पूछती है कि तुम्हारे कानों में इतने छिद्र क्यों हैं? क्या तुम बहुत सारे गहने पहनती थी? उत्तर में दादी कहती है कि नहीं मैं तो इनमें साही के काले सफेद कांटे खोंसती थी-

'एक दिन आजो को गुस्सा आ गया था
किसी बात पर
मारने दौड़े थे आजी को
यकायक ठिठक गए थे
आजो के कदम
आजी के हाथों में
साही के काँटों को देखकर।
ललकारा था आजी ने
हथियार बन गए थे साही के कांटे।
विजयी मुस्कान तैर गयी थी होंठो पर।'[10]

विश्वासी एक्का की कविता इसी तरह के विविध अनछुए ,अनगढ़ अनुभवों को समेटते हुए आगे बढ़ती है,उनकी कविताओं में प्रकृति कि लय है, प्रकृति और प्रेम साथ-साथ चलते हैं, जीवन का उल्लास रचा-पगा हुआ है और यह सब आते हैं समूह भावना में। यहाँ दुःख और सुख सब सामाजिक हैं। महानगरीय जीवन में भौतिक सुख-सुविधाएँ खूब उपलब्ध हैं लेकिन मनुष्य अकेला और अवसाद ग्रस्त है, जीवन का उल्लास कहीं खो सा गया है जबकि तमाम अभावों के बीच सहभाव, जीवन का उल्लास आदिवासी जीवन और साहित्य में हिलोरे लेता दिखायी पड़ता है-

'ओ पहाड़ों की लड़कियां
तुम कोई आदिम गीत गुनगुनाओ
जंगल हसेगा कैसे ....
तुम मौन क्यों हो
खिलखिलाओ।
चलो हम गोल घेरे में
पहाड़ों को घेरते हैं
तुम एक हाथ मेरे कमर पर धरो
मैं एक हाथ तुम्हारी बाँहों पर धरती हूँ।
चलो हम गोधूलि में
धरती का सिन्दूर उड़ाते हैं
चलो रे सहिया
चलो रे संगी
चलो रे साथी।'[11]

किसी भी अवसाद से लड़ने और खून की अंतिम बूँद तक धरती को बचाने की ताकत इसी सहिया भाव में छिपी है। मानुष ही नहीं पहाड़, जंगल, नदी भी उसके सहिया हैं। उसे उनके सुख दुःख की भी चिंता है, उनकी चिंता है कि 'जंगल हसेंगा कैसे? जंगल का होना और हसना, उनका अपना होना और हसना है। 'आदिवासी जीवन के यथार्थ-अनुभव, दृश्य, चरित्र, जीवनचर्या, दैनिक जीवन के संघर्ष और छोटी-छोटी खुशियों को प्रस्तुत करती विश्वासी एक्का की कविताएँ आदिवासी-संसार को शब्दों में पिरोती हैं । इसमें जीवंत चरित्र, उनके संघर्ष, उनके संघर्ष, स्वप्न और दुख-सुख के खट्टे-मीठे क्षण हैं।'[12] इस तरह हम देख सकते हैं कि विश्वासी एक्का की कवितायेँ आदिवासी जीवन की ही तरह सरल और सहज हैं। उनमें तीखापन, विचारों की बोझिलता, भाषा का टेड़ापन और यहाँ तक कि बहुत आक्रोशित भाषा नहीं दिखाई पड़ती। कई बार लगता है कि वे संघर्ष की भीतरी तहों तक नहीं जातीं आदिवासी जीवन का एक खास हिस्सा ही उनकी कविता के दायरे में आता है। हर रचनाकार की अपनी एक सीमा होती है लेकिन उनकी कविता यात्रा आश्वस्त करती है,उनमें संघर्ष के भीतरी तहों की अनुगूंज है जो आगे चलकर निश्चित ही विकसित होगी।

सन्दर्भ सूची:-

1. रणेंद्र : समकालीन जनमत वेब पोर्टल (https://samkaleenjanmat.in/aadivasi-jeevan-aur-mukhyadhara-ka-samaj-by-kathakar-ranender/)
2. एक्का विश्वासी : मौसम तो बदलना ही था,रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, पहला संस्करण-2021, पृष्ठ-23
3. जैन पुनीता : आदिवासी कविता चिंतन और सृजन, सामायिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2023 पृष्ठ -10
4. संपादक : विनोद तिवारी, पक्षधर, नई दिल्ली- वर्ष 12 संयुक्तांक :25, 26 जुला.-दिसं, 2018-जन.-जून,2019 जनजातीय इतिहास लेखन की कठिनाइयाँ और जनजातीय राज वंश, रणेंद्र, पृष्ठ-17,18
5. एक्का विश्वासी : लछमनिया का चूल्हा, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन रांची, 2018 पृष्ठ-37
6. एक्का विश्वासी : मौसम तो बदलना ही था,रश्मि प्रकाशन, लखनऊ, पहला संस्करण-2021, पृष्ठ-23
7. वही पृष्ठ-56
8. वही पृष्ठ-55
9. एक्का विश्वासी : लछमनिया का चूल्हा, प्यारा केरकेट्टा फाउंडेशन रांची, 2018 पृष्ठ-88
10. वही पृष्ठ-13
11. वही पृष्ठ-96
12. जैन पुनीता : आदिवासी कविता चिंतन और सृजन, सामायिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2023 पृष्ठ -455